डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

(3) Describe in brive In betbeen stage and charche do ren of elizabeth solver the Queen

महारानी एलिजाबेथ शासन की राज और चर्च के संबंध की संक्षेप करें।

Ans:- इंगलैंड के सर्व संमवैधानिक इतिहास में महारानी ऐलिजाबेथ का शासन काल बड़ा ही महत्व रखता है। वैसे वह चतुर महिला थी। और सबसे बड़ी बात तो यह है। कि उसका दिमाग वेवक से भरा हुआ है। था। जिस महारानी ऐलिजावेथ का राजा अभिषेक हुआ था उस समय इंगलैंड में भयंकर धार्मिक समस्यायें थी। कैथोलिक प्रोटेस्टेन्ट के बीच गहरी खाई बनती जाती थी। अस्थति इतनी नाजुक थी की दोनो धर्म के मामले में एक दूसरे के खुन पीने के लिए भी तत्पर था। लेकिन महारानी ऐलिजावेथ जो समय-समय से घबराने वाली महिला नही थी उन्होंने अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर सारी समस्याओं को सामना की

महारानी ऐलिजाबेथ का शासन 1558 ईसे 1603 ई० का है। वैसे तो वह चतुर महिला थी और उसका दिमाग हर मल हर पल सोचने में लगा रहता था। वैसे तो यह बात अलग है कि महारानी ऐलिजावेथ को धर्म के क्षेत्र में बहुत ज्यादा लगाव नही था। लेकिन उस समय इंगलैंड की स्थिति बनी हुई थी उसमें सुधार लाना इसका परम कर्तव्य था।

लेकिन इस क्रम में उन्होंने दमन की निति का प्रयोग कभी भी प्रयोग नही किया क्यों कि उस समय इंगलैंड की जानता काफी उग्र थी। इसी लिए उसने प्रेम एवं सहान मुक्ति के बल पर ही इन चीजों की निवटाना उचित समझा लेकिन सबसे दुरवद पहलु यह है कि महारानी एलिजाबेथ को पोप के साथ कभी अच्छा संबध नही रहा इसका एक मात्र कारण यह था कि पोप से उसे व्यक्तिगत चीढ़ थी। क्यों कि पोप ने उनकी माता को ऐनबोलिंग से विवाह करने की आज्ञा नही दी थी। दूसरी बात यह है कि वह इस चीज को भली भाती जानती थी इंगलैंड की जानता भी पोप की हुकूमत में रहना नही चाहती थी। ऐसी स्थिति में उसने सर्वोच्चता नियम पास करवा कर और चर्च पर अपना पुर्ण अधिकार स्थापित कर लिया लेकिन जहाँ तक चर्च के प्रधान का सवाल है। तो उसमें उसके स्थान पर चर्च शासक की पदवी धारण की न की प्रधान की उन्होंने ऐसा इसलिए किया कि क्यों कि ऐसा करने से कैथिलोकों का भावना का कद्दर हो रहा था। इतना ही नही इसके बाद उन्होंने छठे एडवर्ड की समय दूसरी प्रार्थना पुस्तक प्रसार प्रचार पर अधिक बल दिया ऐसा कर के कैथोलिकों अपने पक्ष में कर लिया अब इंगलैंड में नियम बना दिया गया कि अब कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रार्थना

पुस्तक को पढ़ लेकिन चर्च में जाकर इस प्रार्थना को पढ़ना सबों के लिए अनिवार्य कर दिया गया इतना ही नहीं ~~बल्कि~~ इसके साथ ही साथ रविवार को सबों को चर्च में जाना आवश्यक कर दिया गया और साथ ही साथ ~~ही~~ यह भी तय कर दिया गया कि जो व्यक्ति रविवार के दिन चर्च में नहीं पहुँचेंगे तो एक सिलिंग का अर्थ दण्ड लगाया जायगा।

इस तरह एलिजाबेथ द्वारा स्थापित चर्च को एंग्लिकन चर्च कहलाने लगा और में चलकर यह चर्च राष्ट्रीय चर्च हो गया सबसे बड़ी बात तो यह थी ~~प्रोटेस्टेन्टों~~ एंग्लिकन चर्च में कैथोलिकों और प्रोटेस्टेन्टों दोनों का सामावेस हो गया था जिससे इंगलैंड की जानता काफी खुश थी। लेकिन अभी भी कुछ ऐसे कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्टों लोग थे जो अपने विचारों में बिल्कुल परिवर्तन नहीं लाना चाहते। ऐसी स्थिति में महारानी एलिजाबेथ ने दोनों लोगों के साथ कड़ी निति अपनाई। नतिजा यह हुआ कि कैथोलिक लोग विद्रोह कर दिये। लेकिन इस विद्रोह को सिख्त दबा दिया गया। लेकिन अब बदले की भावना से ग्रसित वे लोग रानी को गद्दी से हटाने के लिए रचने लगे। लेकिन उसका षड़यंत्र सफल नहीं हो सका। सबसे बड़ी बात तो यह है।

कि प्यूरिटन लोग भी ऐलिजाबेथ के सुधारों से संतुष्ट नहीं था इसका एक मात्र कारण यह है। कि उन्हे ऐंग्लिकन चर्च से कई बातों की भिन्नता नजर आ रही थी। वैसे लोग प्यूरिटन मूर्ति पूजा के विरोधी थी। वे बेथवल्ल की शुद्ध और सरल शिक्षा पर बल देता था। साथ ही उसका जीवन भी सदा एवं सरल था। वे नाच गान धूम धराका इन सारी चीजों को पसंद बिलकुल नहीं करते थे। वे तो सिर्फ चर्च के सुधार को आगे बढ़ाना चाहते थे। लेकिन महारानी एलिजाबेथ तो इंगलैंड की सासिका थी। और एक सासिका होने के कारण उन्हे सिर्फ चर्च पर ही नहीं बल्कि बहुत सारी चीजों पर ध्यान देना पड़ता था यही कारण है कि महारानी एलिजाबेथ से इन लोगों का संबध अच्छा नहीं था। इसलिए रानी की बातों का अमेलना के फलस्वरूप इन लोग पर रानी कुचक चलना शुरू हो गया। ऐसी स्थिति मे बहुत सी प्यूरिटन लोग चर्च से अपना रिश्ता नाता तोड़ लिया जो बेद मे चलकर इंगलैंड मे डीसेंटर के नाम से जाने लगा इस क्रम महारानी ऐलिजाबेथ ने कितने लोग को निकाल बाहर किया और बहुत सारे लोग को मौत की सजा सुनाई गई इतना ही नहीं बल्कि एक प्रधानाध्यापक जिनका नाम काल राइट था। बात नहीं मानने

के कारण उन्हें जेल की हवा खानी पड़ी। वैसे यह बात अलग है। कि बाद में चलकर वह व्यक्ति संसद तक पहुँच गई और महारानी एलिजाबेथ की शिकायत करने लगी लेकिन इसे कोई खास अन्तर पड़ने वाला नही था। इस प्रकार निष्कर्ष तौर पर हम कह सकते हैं कि महारानी एलिजाबेथ की स्थान इंगलैंड के इतिहास में महत्वपूर्ण है। वैसे उसकी कभी इच्छा नही थी कि धर्म के मामले वह किसी को जबरदस्ती परेशान करे लेकिन कभी कभी आदमी लाचार एवं व्यवस्था हो जाने के बाद कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। और शायद यही स्थिति उनकी हो गई जिसे वे परेशान हो गये। खैर जो कुछ भी हो कि इतना भी सर्वदा सत्य है। कि महत्वपूर्ण शासिका थी।

THE
END